एक कुत्तामय व्यंग्य संग्रह

दरअसल कुत्ता पालना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। हर कोई नहीं पाल सकता। सुदर्शन जैसे कुछ साहसी लोग ऐसा कर जाते हैं। ...ईर्ष्या इसलिये भी होती है कि कुत्ता पालने वाले के जीवन में कम-से-कम एक निष्कपट, निस्वार्थ प्रेम आ जाता है। कुत्ता अपने मालिक से गहरा प्रेम करता है। वह निस्वार्थ प्रेम करता है।

क्या आप विश्वास करेंगे सुदर्शन सोनी ने कुत्ते पर चौंतीस व्यंग्य रचनायें लिख डाली हैं। शायद आप न माने पर यह सच है। प्रमाण के तौर पर सुदर्शन का यह व्यंग्य संग्रह प्रस्तुत है। एकदम नया प्रयोग मान लें। सारी रचनायें कुत्ता केन्द्रित मज़ेदार हैं। कोई शख़्स कुत्ते पर आख़िर कितना सोच, लिख सकता है यार? इन रचनाओं को सुदर्शन सोनी जी ने एकदम कुत्तामय होकर लिखा है। कुत्ते को इतने कोण से देखा है कि कुत्ता कृत्कृत्य महसूस करता यदि वह ये व्यंग्य पढ़ पाता। वह न पढ़ सके आप तो पढ़ ही सकते हैं। यह संग्रह पढ़ें। पढ़कर सुदर्शन से ईर्ष्या करें, मज़े लें। और समझें कि सड़क पर यूँ ही भटकता कुत्ता ऐसा भी फ़ालतू प्राणी नहीं है - पूरा एक व्यंग्य संकलन भटक रहा है सड़क पर, बस, सुदर्शन जी वाली व्यंग्य दृष्टि चाहिये।

-ज्ञान चतुर्वेदी

- कुत्तों पर केन्द्रित यह एक अद्भुत पुस्तक है

- निर्मल गुप्त

- कुत्तागिरी पर व्यंग्य तो बहुत हुए हैं। पर सिर्फ़ कुत्तों पर केंद्रित व्यंग्य संग्रह मेरी जानकारी में हिंदी में तो ना आया है। एशिया का यह ऐसा पहला व्यंग्य संग्रह है

- आलोक पुराणिक

लेखक की बात

उस काली रात में पूरी रात वह बैचेन रहा। तबियत ख़राब होने पर हमारे बेड पर भी आकर चढ़ गया फिर नीचे उतरने का नाम नहीं ले। बैठक कक्ष में आकर कमरे के कोनों को ढूँढ़ने की कोशिश करता। बैठ जाये तो खड़े होने का नाम न ले और खड़ा हो जाये तो बैठने का नाम न ले! वैसे पन्द्रह दिन पहले से शायद उसे कुछ कुछ आभास होना प्रारम्भ हो गया था। वह रोज़ मध्यरात्रि के समय ऊपर जहाँ उसके सोने की जगह थी से उतर कर नीचे हमारे बेडरूम में अपने-आप ही आ जाता था। उसकी तबियत लगातार बिगड़ी तो हम पशु चिकित्सकों को आधी रात को फोन लगाते रहे, लेकिन वे काहे को उठाते। ऐसे करते-करते सुबह के पाँच बज गये। फिर हम उसे लेकर उसका नियमित इलाज करने वाले डॉक्टर के

यहाँ ले गये लेकिन वे भी काहे को सुनते। बहुत आवाज़ लगाने व दरवाज़ा पीटने पर अंदर से बताया गया कि डॉक्टर साहब भोपाल में नहीं हैं। डॉक्टर के घर में होते हुये भी सफ़ेद झूठ बोला गया। जो चिकित्सक साल दो साल से इलाज कर रहा था वह अंतिम बेला में इस आशंका में पीछे हट गया कि रॉकी की मौत का दोष उसके सिर पर ना आये।

डोडो का पॉटी संस्कार

क्योंकि उनकी पूँछ बराबर घड़ी के पेंडुलम की तरह हिल रही थी। हाँ, ध्यान रखें कि यह भोपाल है यदि मुम्बई होता तो जगह की इतनी कमी है कि कुत्ते को भी पूँछ ऊपर नीचे करके हिलानी पड़ती है! टोक्यो, न्यूयार्क में क्या होता होगा। वहाँ पूँछ हिलाने के लिये सार्वजनिक जगहें नियत होंगी जहाँ अलग से डॉगी को ले जाते होंगे!

गाँधीमार्ग का कुत्ता

एक मरियल सड़क छाप कुत्ते से इसकी दाँत काटी दोस्ती हो गयी। अब वह मरियल चाहे जब आकर इसके कटोरे से रोटी, दूध, पेडीग्री अंदर कर बिना डकार चुपचाप रवानगी डाल लें और यह किसी महात्मा की तरह शांत, तटस्थ भाव से निर्विकार सा बस देखता रहे। कभी कोई प्रतिकार नहीं! वह पूँछ हिलाता इसकी इस

दानवीरता पर तो यह भी पूँछ हिलाकर अपनी हामी जैसी देता कि ठीक है, कोई बात नहीं, मैं खाऊँ कि तू खाये एक ही बात है। यहाँ तो वैसे भी सब खाने के एक सूत्रीय परम कार्य में जैसे मधुमक्खी शहद बनाने में संलिप्त हैं। सरकारी योजनाओं के छत्ते के धन रूपी मधु से अपना साम्राज्य बनाने में वैसे ही संलिप्त हैं!

पचास साल बाद के भारत में जो कि अब एक ओर, 'न्यू इंडिया' ज़्यादा हो गया है तो दूसरी ओर न्यून भारत हो चला है! भारतीयों पर तो गाँधीवाद का ज़्यादा असर नहीं पड़ा दिखता, लेकिन कुत्ते पर पड़ गया है। यह तो अपना एक गाल नुचवाने के बाद दूसरा गाल उस कुत्ते के सामने सहर्ष पेश कर देता!

कुकर व कामनवेल्थ

कालू कुत्ता यहाँ आकर इतना प्रसन्नचित्त व महत्वाकांक्षी हो गया है कि वह कॉमनवेल्थ खेलों में कुत्ता दौड़ की ही माँग करने की सोचने लगा। लेकिन अपने कुनबे के साथ हुई चर्चा के बाद यह विचार इस आधार पर त्याग दिया था कि इस देश में तो वैसे ही हर जगह कुत्तेपन की ही दौड़ हो रही है! कौन कुत्तेपन में किससे कितना बड़ा है,यानी छीना-झपटी में मेरा पेट भर-भर जाये, चाहे दूसरों को भूखा सोना पड़े।

बेचारे ये कुत्ते घुमाने वाले

आजकल मुझे कुत्ते घुमाने वालों पर काफ़ी दया आ रही है। ऐसा नहीं है कि पहले लोग कुत्ते नहीं घुमाते थे या कुत्ता घुमाने वाले को नहीं घुमाता था। लेकिन शायद हमारी पारखी नज़रें ऐसे लोगों पर नहीं पड़ी थीं! ठीक है 'देर आयद दुरस्त आयद'। वैसे तो इस देश में न जाने कब से राजनैतिक दल मतदाताओं को घुमा रहे हैं लेकिन वे हैं कि समझते ही नहीं। कुत्ते से ही सीख लेते हर बार आप उसे नहीं घुमा सकते कई बार उसे घुमाने वाले को वह घुमाने लगता है! एक सीख मिलती है कि 'कुत्तों को लतियाने में नहीं उनसे सीखने में समझदारी है।'

अगले जनम मोहे कुत्ता कीजो

ये डोडो नाम का पिल्ला भी इतना चालू होता जा रहा था कि जब पत्नी घर में होती तो हमारी ओर वह तिरछी नज़रों से भी देखना पसंद नहीं करता था। पूँछ हिलाना तो दूर की बात थी। पूँछ वह पत्नी को ही देखकर हिलाता था, क्योंकि उसके सारे काम वहीं से उसके एक क्या, आधी पूँछ हिलाने पर हो रहे थे। मुझे वह तभी घास डालता जब कि पत्नी कहीं काम से दो-चार घंटे के लिये गयी हो। मुझे तो यह देख-देखकर लगता कि इस जन्म का तो ठीक है जैसे-तैसे कट रही है। लेकिन अगले में इंसान बनने से तो बेहतर है

कि अगले जन्म में ऐसा ही कोई कुत्ता भगवान बना दे!

कुत्ताजन चार्टर

शेर, गरूड़, मोर, भैंसा यहाँ तक की चूहे तक को दैवीय सामीप्य प्राप्त है ये किसी न किसी भगवान की सवारी हैं। हम श्वान समुदाय भी इसकी माँग करते हैं। हमें भी इस स्तर पर पहुँचाने की कार्यवाही की जाये चाहें तो वफ़ादारी के नाम से एक भगवान को ईजाद कर उसकी सवारी हमें घोषित कर दिया जाये। इस देश में यह काम सबसे आसान है। यहाँ तो रास्ते में पड़ी शिला में सिंदूरी या हरा रंग पोत कर वहाँ मंदिर, मज़ार बनाने की आधारशिला रखने की परंपरा है। एक कुत्ते वाले बाबा की मज़ार है उन्हीं को भगवन का अवतार मान लिया जाये। जब इतने अवतार हैं तो एक श्वानों के लिये में क्या आपत्ति किसको होगी?

सभा एक कमेटी भी तीन श्वानों कालू, शेरा व टॉयगर की बनाती है जो इस बात की रिपोर्ट देंगे कि उक्त माँगों पर कितना काम समय पर हुआ और कितना नहीं, लेकिन इस कमेटी का कार्यकाल कुल छह माह का ही होगा। किसी भी हालत में इसे बढ़ाया नहीं जायेगा

कुत्ता चिंतन

अबकि पामेरियन से नहीं रहा गया। वह बोला कि और

देखो ये ख़ुद तो दिन भर रोमांस करना चाहते हैं। मालिक देखो कैसे मालकिन को जाकर किचन में चूम लेता है। बेडरूम की तो बात ही दूसरी है! यह कहते ही शर्मा जाने से उसकी दुम तेज़ी से हिलने लगी। लेकिन अपन ज़रा सा किसी को देखकर अपने प्रेम का इज़हार, क्या दो इशारे प्रेम के करने चाहें, मतलब ज़रा सी पूँछ हिलायें प्यार से तो इनको नागवार गुज़रने लगता है। वही फिर ज़ंजीर खींचना शुरू कर देंगे। यह तो स्वार्थ लिप्सा हुई कि ख़ुद रोमांस करो,चार-चार गर्ल फ्रैंड रखो और हम दो बनाना चाहे तो इन्हें बदहजमी होने लगे!

एक कुत्ते की आत्म कथा

ख़ैर, क़िस्मत के बदे को कौन टाल सकता है। मैं जब यहाँ आया तो सब मुझे हाथों-हाथ ले रहे थे। दादी कह रही थी कि कितना प्यारा सा है। भैया भी कह रहे थे कि वाक़ई यह ग़ज़ब का है। मम्मी जी कह रहीं थीं कि इसकी आँखें सुंदर हैं। इन लोगों को उस समय मेरी नहीं मेरी माँ की आँखों में झाँकना था; उनमें आँसुओं का सैलाब भरा हुआ था। उसे तो पता ही नहीं था कि उसके साथ यह सलूक आख़िर किया क्यों गया है? वह सोच रही है कि मालूम होता कि उसका मालिक ऐसा सिला देने वाला है तो वह किसी से इश्क़ करती ही नहीं। वैसे भी यह मेल प्रजाति इश्क़ करने

लायक़ है नहीं! यह तो मतलब निकलने के बाद पलटकर भी नहीं देखती। वह पड़ोस का टायगर नामक कुत्ता आज तक यह देखने नहीं आया कि अपनी प्यार की निशानी गयी कहाँ? अब तो वह बेवफ़ा लाड़ो के साथ पींगे बढ़ा रहा है! वैसे भी मीटू के ख़ुलासे देख सुनकर तो लग रहा है कि ये मेल प्रजाति किसी काम की नहीं है इसमें लम्पटता कूट-कूट कर भरी है।

परोपकार में सेंध

माँ गिर-गिर पड़ती थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतनी कमज़ोर माँ के पिल्ले इतने तंदुरुस्त? तू धन्य है माँ! पिल्ले अब उसके चारों ओर झूम रहे थे। घूम रहे थे। वे भूखे थे। माँ के दूध की उन्हें आवश्यकता थी। लेकिन माँ गिर गिर पड़ रही थी। वह संभवतः पाँच-पाँच बच्चों की इच्छा की पूर्ति नहीं कर पा रही थी। लेकिन बच्चे क्या करें वे तो माँ की तकलीफ़ से अनभिज्ञ थे। माँ के बारे में शिशु को बाद में पता चलता है कि उसकी माँ ने कितनी तकलीफ़ उठाकर पाला, कितने जतन किये, ख़ुद भूखी रही, लेकिन उसकी उदर पूर्ति कैसे भी हो करती रही! लेकिन ये तो पिल्ले हैं। एक समय बाद तो यह भी भूल जायेंगे कि उनकी माँ कौन सी है! न कहो उसे ही बड़े होकर गुर्राने लगें! अपने इलाक़े से खदेड़ दें! लगता है इंसान के साथ रहते-रहते कुत्तों में भी उसके कुछ अवगुण आ गये हैं!

आदमी माँ बाप को वृद्धाश्रम की ओर खदेड़ते हैं तो कुत्ते भी इलाक़े से खदेड़ देते हैं।

मेरी नज़र पिल्लों पर तो नहीं गयी। दो ख़ूबसूरत चेहरों पर चली गयी। कुछ देर तक तो मैं इन्हें एकटक देखता रहा। मैंने सोचा कि सुबह-सुबह की ताज़ी हवा का डोज़ डबल हो जाता है यदि ऐसे ताज़गी भरे चेहरे भी दिख जायें! लेकिन मैंने इन दोनों चेहरों के भाव पढ़ने शुरू कर दिये। इनके चेहरे पर दया, करुणा, प्रेम वात्सल्य, संतोष व ख़ुशी के भाव एक साथ आ रहे थे। मैंने सोचा कि बात क्या है? इनकी हसीन नज़रें किसे देख रहीं हैं? क्या अपनी हालत ऐसी हो गयी है कि लोग देखकर दया, करुणा दिखायें? नहीं अपने को नहीं देख रही हैं!? अपने को देखते ज़माना गुज़र गया। जब से शादी हुई है तो शायद चौखटा ही ऐसा हो गया है कि अब लड़कियाँ समझ जाती हैं कि ये तो 'सेकेण्ड हैंड आलरेडी सोल्ड कबाड़ माल' है। कुँवारा यौवन रूपी स्वर्ण नहीं विवाहित रोल्ड गोल्ड है! समय बरबाद करने में कोई फ़ायदा नहीं!

कुत्ता पालक व शायराना अंदाज!

इस सीधी सड़क पर जिसके दोनों ओर वृक्ष ऐसे झुके थे जैसे कि एक दूसरे से गलबहियाँ करना चाह रहे हों। कुछ वृक्ष ऐसे झुके थे जैसे कि सड़क को चूमना चाहते हों। शायद इस बात की

शाबाशी देना चाह रहे हों कि तू कितनी कर्मठ है। अपने ऊपर इतने भार दिन भर, और रात को भी झेलती है, लेकिन थकती नहीं कभी उफ़्फ़ तक नहीं करती। सड़क तू माँ है क्या? लो मैं भी शायरी करने लगा! सड़क तेरा कभी संडे नहीं होता कभी कोई छुट्टी नहीं होती!